Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 23th August 2019, Revised on 8th Sept. 2019; Accepted 13th Sept. 2019

शोध–पत्र

प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन या विज्ञान में विद्यार्थियों की उपलब्धि पर शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा शिक्षण की प्रभावशीलता - प्रयोगात्मक अध्ययन

महिमा मिश्रा

*सतीश चन्द सैनी, सहायक आचार्य
एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर
Email-Satishchandsaini75@gmail.com, Mob- 9887543963

मुख्य शब्द– कुशलताएँ, सूचनाएं, तथ्य, दृष्टिकोण *आदि।*

सारांश

"सः विद्या या विमुक्तये" अर्थात विद्या अथवा शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाएं, मुक्ति अशिक्षा से, मुक्ति अज्ञानता से। शिक्षा का उद्देश्य सुखी व पूर्ण जीवन है। शिक्षा व्यक्ति द्वारा समाज में समायोजन करने हेतु व्यवहार की वांछनीय रचना अथवा व्यवहार का रूपांतर है। शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक कार्यों को अधिक कुशलता प्रदान करने में शैक्षिक तकनीकी का महत्वपूर्ण योगदान है। शैक्षिक तकनीकी एक व्यवहारिक तकनीकी है, जो शिक्षण कला को नए ढंग से प्रस्तुत करती है।

प्रस्तावना

बालक में आवश्यक कुशलताएँ, सूचनाएं, तथ्य व दृष्टिकोण उत्पन्न करने एवं अपने पर्यावरण के साथ यथा योग्य सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता विकसित करने हेतु समाज में पृथक रूप से विद्यालय जैसे अभिकरण की स्थापना की है, जहां बालक की उन सभी योग्यताओं व क्षमताओं का विकास किया जाता है जो उनके समाज में सफलतापूर्वक समायोजन के लिए आवश्यक है। समाज व समुदाय की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि आवश्यकताओं के अनुसार ही शिक्षा को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया जाता है। शिक्षा वांछित व्यवहारों, आदतों, कुशलताओ व कौशलों तथा दृष्टिकोण का विकास है, जो व्यक्ति विशेष को अच्छा व्यवहारिक बनाते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया में हम बालकों के व्यवहार को राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन के उद्देश्यों के अनुरूप आकार अथवा रूप देने का प्रयास करते हैं। संक्षेप में कहे तो " शिक्षा व्यक्ति द्वारा समाज में समायोजन करने हेतु व्यवहार की वांछनीय रचना अथवा व्यवहार का रूपांतरण है।" बालक को समाज से संबंधित पूर्ण ज्ञान प्रदान करना चाहिए। उसे सामाजिक उद्देश्यों, दशाओं, सामाजिक संगठनों व प्रकृति वातावरण का ज्ञान होना चाहिए। महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य है :

- बालक के श्रेष्ठ कौशलों व मानसिकता का विकास करना
- चरित्र निर्माण व रचना करना
- संपूर्ण विकास- सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक
- वैयक्तिक एवं सामाजिक उद्देश्यों का सामाजिक उद्देश्यों का संश्लेषण करना

- लोकतांत्रिक आदर्शों का विकास
- ईश्वर की अनुभूति

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताए हैं:

- स्वयं का विकास
- वृद्धि की स्वतंत्रता
- कठोर परिश्रम
- अच्छी आदतों का निर्माण का विकास
- त्रुटियों से सीखना
- स्वधर्म की आपूर्ति
- चरित्र निर्माण
- नैतिक व आध्यात्मिक मूल्य

सामाजिक अध्ययन एक वृहद विषय है जो बालक व उसके चतुर्दिक वातावरण के मध्य अंतर निर्भरता की व्याख्या करता है, समाज की ऐतिहासिक, तात्कालिक व भविष्य संबंधी घटनाओं को समझने में व उनसे समायोजन करने में बालक को सहयोग देता है। भूगोल के अध्ययन से बच्चे भिन्न-भिन्न फसलों, वनस्पतियों, विभिन्न जातियों, धर्मो, मत- मतानतर के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। इसका उद्देश्य बालकों में यह भावना पैदा करना है कि मनुष्य प्राकृतिक परिवेश पर निर्भर है। इतिहास के अध्ययन में विषय की व्याप्ति स्थानीय इतिहास से लेकर देश के इतिहास तक और कभी कभी तो संसार के विभिन्न देशों और उसकी सभ्यताओं और उनके प्रभाव के अध्ययन तक फैली होती है। इससे संस्कृति के सातत्य और परिवर्तन तथा पाठ्यक्रम का पता चलता है। सामाजिक व राजनीतिक अध्ययन भिन्न भिन्न प्रकार की नागरिक एवं सामाजिक संस्थाओं, उनकी संरचनाओं, कार्यों और समस्याओं का विवेचन करता है। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार की सरकारों, उनके गुण दोषों, इन प्रणालियों के व्यक्तियों के अधिकारों तथा कर्तव्यों का अध्ययन किया जाता है। नागरिक शास्त्र पढ़ने का एक प्रयोजन छात्रों में उच्च नागरिकता की भावना जागृत करना है।

<u>सामाजिक अध्ययन विज्ञान एवं शैक्षिक तकनीकी</u>

हम विज्ञान एवं तकनीकी के युग में रह रहे है। मनुष्य की कार्य प्रक्रियाओं तथा उसके उत्पादन में विज्ञान एवं तकनीकी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी शैक्षिक कार्यों को अधिक कुशलता प्रदान करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान कर रही है।

शैक्षिक तकनीकी में 3 प्रक्रियाएं सम्मिलित है:

1. शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया का प्रकार्यात्मक विश्लेषण जिसमें शिक्षक उन सभी तत्वों का अवलोकन करता है जो अदा के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं।

2. उन तत्वों की प्रथक एवं संयुक्त खोज व विश्लेषण जो अदा एवं प्रदा प्रक्रिया के दौरान शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उपयोग किए जाते हैं।
3. शोध परिणामों के रूप में प्राप्त अधिगम अनुभवों का प्रस्तुतीकरण।

इस प्रकार शैक्षिक तकनीकी एक व्यवहारिक तकनीकी है जो शिक्षण कला को नए ढंग से प्रस्तुत करती है तथा उन कारकों की सहायता से शैक्षिक प्रभावों को नियंत्रित करती है जो शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने में प्रयुक्त होते हैं।

शिक्षण सहायक सामग्री मुख्य रूप से अधिकतम एवं शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से तैयार व रुपांकित की जाती है जो शिक्षक के साथ मिलकर विद्यार्थियों को चयनित ज्ञानेंद्रिय अनुभव प्रदान करते हैं। दूसरे शब्दों में, अध्यापक द्वारा अधिकतम अनुभवों के रूप में जो कुछ संप्रेषित किया जाता है, वह बिना किसी अवरोध के अच्छे से अच्छे रूप मैं शिक्षार्थी तक प्रवाहित हो सके और शिक्षार्थी उसे स्वयं एवं प्रभावपूर्ण रूप में ग्रहण कर सके, इसके लिए शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के मध्य कार्य करने वाली संप्रेषण कड़ी को सशक्त बनाने हेतु शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के रूप में प्रभावित शिक्षा धारा को सही ढंग से बहते रहने में जो वस्तु, सामग्री, साधन और उपकरण आदि अध्यापक और शिक्षार्थी दोनों की ही सहायता करते हैं उन्हें शिक्षण अधिगम अथवा शैक्षिक तकनीकी के क्षेत्र में शिक्षण सहायक सामग्री कहां जाता है।

चयनित ज्ञानेंद्रिय अनुभव प्रदान करने वाली अर्थपूर्ण एवं आनंदपूर्ण क्रियाओं को संगठित व व्यवस्थित करने में शिक्षण सहायक सामग्री अत्यधिक प्रभावशाली है। यह अच्छे अभी प्रेरक होते हैं, आकर्षक होते हैं जो विद्यार्थी को शीघ्रता से सीखने, तथ्यों को लंबे समय तक याद रखने में सहायक होते हैं एवं सही सही जानकारी प्रदान करते हैं। सहायक साधनों द्वारा संवेदनशील, कठिन एवं अति सूक्ष्म व विलक्षण तथ्यों व अर्थों को आसानी से समझा व प्राप्त किया जा सकता है।

शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण

विद्यालय के शैक्षिक वातावरण पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होता है कि सामाजिक अध्ययन जैसे आवश्यक विषय को बहुत ही साधारण ढंग से पुस्तक पढ़ने एवं अध्यापक द्वारा विषय वस्तु के बारे में छात्रों से परिचर्चा कर लेने जैसी विधाओं द्वारा ही विषय के शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया को संपन्न कर दिया जाता है, जबकि सामाजिक अध्ययन विषय का शिक्षण इतना प्रभावी होना चाहिए कि बालक उसे अपने सामान्य जीवन व दिन प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान तथा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयोग कर सकें। अतः आवश्यक है कि कुछ ऐसे साधनों का उपयोग करें जिससे शिक्षार्थी समस्या व घटना की विषय वस्तु की अनुभूति कर सके शिक्षण सहायक साधन प्रेक्षण के प्रभावी साधन है, प्रत्येक साधन की अपनी विशेषताएं हैं जो सूचनाओं के आगमन को प्रभावित करती है। अनुदेशात्मक ढांचे के अंतर्गत इनका प्रयोग अनुदेशन पद्धति, विषय एवं उद्देश्य की मांग द्वारा निर्धारित होता है। इस प्रकार शिक्षण साधन स्वयं में अनुदेशात्मक अदाएं हैं एवं अधिगमकर्ता के लिए प्रासंगिक अनुभव प्रदान करती है।

अध्ययन का औचित्य एवं महत्व

आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में जहां हर क्षेत्र में तकनीकी ने प्रवेश कर लिया है, शिक्षा का क्षेत्र भी उससे अछूता नहीं है। जन्म लेते ही बच्चा अपने चारों और तकनीकी उपकरणों को देखता है । समय के साथ वह इनके उपयोग के तरीकों से

अवगत होता है | सामाजिक अध्ययन जैसे सामाजिक विषय, जिस की विषय वस्तु बालक के सामाजिक एवं भौतिक वातावरण से संबंधित है, को यदि शिक्षार्थियों को कक्षा कक्ष में ऐसा वातावरण निर्मित कर प्रेषित किया जाए जिसमें वह अपने दैनिक क्रियाकलाप करते हैं एवं अधिकतम समय व्यतीत करते हैं तो संभवतः उनका अधिगम स्तर उच्च होगा| अतः यह आवश्यक हो जाता है की सामाजिक अध्ययन जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक विषय के तथ्यों एवं विषय वस्तु को क्रमवार तकनीकी तरीके से शिक्षार्थियों के विभिन्न शिक्षण साधनों का उपयोग कर इस उद्देश्य की पूर्ति की जा सकती है तथा इस उद्देश्यों की पूर्ति के साथ ही सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के शिक्षण व अधिगम के उद्देश्य एवं अंततः शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा किया जा सकता है|

उपर्युक्त तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए ही शोधकर्ता द्वारा " प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियों की उपलब्धि पर शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा शिक्षण की प्रभावशीलता प्रयोगात्मक अध्ययन " विषय को चयनित किया गया है|

समस्या का कथन

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या का कथन निम्न प्रकार से है

" प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियों की उपलब्धि पर शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा शिक्षण की प्रभावशीलता- प्रयोगात्मक अध्ययन "

अध्ययन के उद्देश्य

1. विद्यार्थियों की उपलब्धि पर विधिवत विधि एवं शिक्षण सहायक सामग्री की तुलनात्मक प्रभावशीलता ज्ञात करना |
2. भूगोल शिक्षण में शिक्षण सहायक सामग्री की प्रभावशीलता ज्ञात करना |
3. इतिहास शिक्षण में शिक्षण सहायक सामग्री की प्रभावशीलता ज्ञात करना |
4. सामाजिक राजनैतिक जीवन शिक्षण में शिक्षण सहायक सामग्री की प्रभावशीलता ज्ञात करना |
5. समेकित रूप में सामाजिक अध्ययन या विज्ञान के शिक्षण में शिक्षण सहायक सामग्री की प्रभावशीलता ज्ञात करना |

परिकल्पनाएं

Ho_1 भूगोल के शिक्षण में विधिवत विधि एवं शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा शिक्षण में सार्थक अंतर नहीं है|

Ho_2 इतिहास के शिक्षण में विधिवत विधि एवं शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा शिक्षण में सार्थक अंतर नहीं है|

Ho_3 सामाजिक राजनैतिक जीवन के शिक्षण में विधिवत विधि एवं शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा शिक्षण में सार्थक अंतर नहीं है|

Ho_4 समेकित रूप में सामाजिक अध्ययन या विज्ञान के शिक्षण में विधिवत विधि एवं शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा शिक्षण में सार्थक अंतर नहीं है|

परिसीमाएं

1. प्रयोग हेतु अजमेर शहर के मात्र 2 विद्यालयों का चयन किया गया है|

2. प्रयोग में कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है|

3. पूर्वार्ध परीक्षण एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर प्रयोगात्मक एवं नियंत्रण समूह में अनुरूपता स्थापित की गई है|

4. भूगोल, इतिहास एवं सामाजिक राजनैतिक जीवन उप विषयों का ही शिक्षण किया गया है|

5. प्रत्येक उप विषय के मात्र 1-1 अध्याय का शिक्षण हेतु चयन किया गया है|

शब्दों की परिभाषा

1. विधिवत विधि -

विधिवत विधि से अभिप्राय विद्यालय में अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त सामान्य विधि से है| इस विधि के अंतर्गत शिक्षक कक्षा में विषय विशेष पर पाठ्य पुस्तक के सहयोग से सूचनाएं प्रेषित करता है|शिक्षक अपने तरीके से कठिन तथ्यों की व्याख्या करता है|

2. शिक्षण सहायक सामग्री विधि

शिक्षण सहायक सामग्री से अभिप्राय उस विधि से है जिसमें शिक्षक शिक्षण सहायक सामग्री के सहयोग से विषय वस्तु का प्रेषण छात्रों को करता है| इसके अंतर्गत विभिन्न शिक्षण सामग्रियों जैसे ओवर हेड प्रोजेक्टर, फिल्म स्ट्रिप, चार्ट, चलचित्र, मॉडल, कठपुतली, रोल प्ले आदि का प्रयोग किया जाता है जिनके माध्यम से छात्र स्वयं अवलोकन करके समस्या अथवा विषय के बारे में जानने का प्रयास करते हैं| इनके माध्यम से छात्र अपनी ज्ञानेंद्रियों का पूर्ण प्रयोग कर विषय वस्तु का अवलोकन करते हैं एवं उसे समझते हैं|

3. प्रभावशीलता

प्रस्तुत अध्ययन में प्रभावशीलता से अभिप्राय प्रयोग हेतु चयनित दोनों विधियों विधिवत विधि एवं शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा शिक्षण करने पर छात्रों की उपलब्धि पर दृष्टिगत होने वाले प्रभाव से है|

न्याय दर्शन का चयन

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन विषय की उपलब्धि पर शिक्षण सहायक सामग्री की प्रभावशीलता ज्ञात करना है | इस उद्देश्य से अन्वेषिका द्वारा निम्नलिखित विद्यालय, छात्र आदि का चयन किया गया -

1. प्रयोग हेतु न्याय दर्श के रूप में चयनित मदार, अजमेर क्षेत्र का एवं केसरगंज, अजमेर क्षेत्र का विद्यालय
2. प्रयोग हेतु चयनित कक्षा 8
3. प्रयोग संबंधी चयनित विद्यार्थी - छात्र व छात्राएं

चयनित कक्षा के दो वर्गो - (A) एवं वर्ग- (B) का दो वर्गों - नियंत्रित समूह एवं प्रयोगात्मक समूह के रूप में चयन किया गया | प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी परंतु अन्वेषिका द्वारा शिक्षण अवधि के दौरान लगातार उपस्थित छात्रों को ही न्याय दर्श रूप में चयनित किया गया |

1 . प्रयोगात्मक समूह के योग (N) - 64

2. प्रयोगात्मक समूह के छात्रों का योग (N = 32)

3. नियंत्रित समूह के छात्रों का योग (N = 32)

4. छात्रों की औसत आयु - 13 से 14 वर्ष

5. अधिगम व अनुदेशन/ शिक्षण का माध्यम हिंदी

अध्ययन में प्रयुक्त चर

- स्वतंत्र चर = शिक्षण विधियां
- परतंत्र चर = शैक्षिक उपलब्धि

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

1. अन्वेषिका द्वारा स्वनिर्मित अप्रमातीक्रत (निष्पत्ति परीक्षण) प्रश्न पत्र, चयनित विषय वस्तु पर आधारित पूर्वार्ध परीक्षण प्रश्न पत्र - दोनों समूह के छात्रों का चयनित विषय वस्तु के विषय में पूर्व ज्ञान को ज्ञात करने हेतु
2. अन्वेषिका द्वारा स्वनिर्मित अप्रमातीक्रत (निष्पत्ति परीक्षण) पत्र, शिक्षण हेतु चयनित विषय वस्तु पर आधारित उत्तरार्ध परीक्षण पत्र, दोनों समूह के छात्रों के शिक्षण के पश्चात प्रेक्षित विषय वस्तु से संबंधित ज्ञान की शैक्षिक उपलब्धि के अंक ज्ञात करने हेतु

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी अथवा सांख्यिकी

शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा आंकड़ों के विश्लेषण तथा परिकल्पना ओके निरीक्षण अथवा सत्यापन हेतु अध्ययन में निम्न सांख्यिकी प्रविधियां का प्रयोग किया गया

1. माध्य
2. प्रमाप विचलन
1. टीमान / टी - परीक्षण

सारणी -1

नियन्त्रित समूह के छात्रों के सामाजिक अध्ययन मे उपलब्धि अँको के माध्य एवं 't' - मान

समूह	परीक्षण	N	प्राप्ताको के मध्य = कुल मध्यमान				प्रमाप विचलन	't' – मान NS/S
			भू.	ई.	सा. रा. जीवन	स.अ.		
नियंत्रित समूह	पूर्वार्ध उत्तरार्ध	32	7.4381 16.031	8.875 12.094	4.281 11.688	20.781 39.969	7.667 9.181	1.79 Ns

सारणी -2

प्रयोगात्मक समूह के छात्रों के सामाजिक अध्ययन मे उपलब्धि अँको के माध्य एवं 't' - मान

समूह	परीक्षण	N	प्राप्ताको के मध्य = कुल मध्यमान				प्रमाप विचलन	't' – मान NS/S
			भू.	ई.	सा. रा. जीवन	स.अ.		
प्रयोगात्मक समूह	पूर्वार्ध उत्तरार्ध	32	8.719 26.781	8.656 16.25	5.375 13.813	23.156 56.875	6.381 11.198	2.563 S

सारणी -3

भूगोल में उपलब्धि के आधार पर समूहों की तुलना

समूह	परीक्षण	मध्यमान	प्रमाप विचलन	't' – मान NS/S	सार्थक नहीं / सार्थक NS/S
नियंत्रित प्रयोगात्मक	उत्तरार्ध	16 – 03 26 – 78	3.972 5.0144	5.0753	S

सारणी -4

इतिहास में उपलब्धि के आधार पर समूहों की तुलना

समूह	परीक्षण	मध्यमान	प्रमाप विचलन	't' – मान NS/S
नियंत्रित	उत्तरार्ध	12.094	3.286	5.8996
प्रयोगात्मक		16.25	3.681	

सारणी -5

सामाजिक व राजनैतिक जीवन में उपलब्धि के आधार पर समूहों की तुलना

समूह	परीक्षण	मध्यमान	प्रमाप विचलन	't' – मान NS/S
नियंत्रित	उत्तरार्ध	11.688	5.1396	0.0562
प्रयोगात्मक		13.813	5.418	

सारणी -6

सामाजिक अध्धयन मे उपलब्धि के आधार पर समूहों की तुलना

समूह	परीक्षण	मध्यमान	प्रमाप विचलन	't' – मान NS/S
नियंत्रित	पूर्वार्ध	20.781	7.667	0.877
प्रयोगात्मक		23.156	6.381	
नियंत्रित	उत्तरार्ध	39.369	9.181	5.178
प्रयोगात्मक		56.875	11.198	

विश्लेषण

सारणी क्रमांक एक से ज्ञात होता है की नियंत्रित समूह का पूर्वार्ध परीक्षण में मध्यमान 20. 781 तथा उत्तरार्ध परीक्षण का मध्यमान 39.969 है। इनका टी मान 1.79 है जो सार्थक स्तर 0.05 से कम है। अतः हम कह सकते हैं कि दोनों परीक्षणों के मध्य परिणामों में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक दो से ज्ञात होता है कि प्रयोगात्मक समूह के पूर्वार्ध परीक्षण के अंको का मध्यमान 23.156 है तथा उत्तरार्ध परीक्षण के अंको का मध्यमान 56.875 है। प्राप्त टी मान 2.563 है जो 0.5 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि दोनों परीक्षणों के मध्य अंतर है।

सारणी क्रमांक तीन से ज्ञात होता है कि नियंत्रित समूह के उपलब्धि अंको का मध्यमान 16.0313 है तथा प्रयोगात्मक समूह के अंको का मान 26.7813 है तथा प्राप्त टी मान 5.0753 है जो सार्थकता स्तर के सारणी मान से अधिक है। इस प्रकार दोनों समूहों में पाया जाने वाला अंतर सार्थक है।

सारणी क्रमांक चार से ज्ञात होता है कि उत्तरार्ध परीक्षण में नियंत्रित समूह के उपलब्धि अंको का मध्यमान 12.094 है तथा प्रयोगात्मक समूह का मध्यमान 16.25 है जो 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान से अधिक है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं की उत्तरार्ध परीक्षणों के आधार पर नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक समूह में सार्थक अंतर है।

सारणी क्रमांक 5 से ज्ञात होता है कि उत्तरार्ध परीक्षण में नियंत्रित समूह द्वारा सामाजिक राजनैतिक जीवन शास्त्र में प्राप्त उपलब्धि अंको का माध्य 11.688 है जबकि प्रयोगात्मक समूह का मध्यमान 13.813 है तथा टी मान 0.0562 है जो 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान से कम है इस प्रकार दोनों समूहों के मध्य पाया जाने वाला अंतर सार्थक नहीं है।

सारणी क्रमांक 6 से ज्ञात होता है कि पूर्वार्ध परीक्षण में नियंत्रित समूह तथा प्रयोगात्मक समूह के मध्यमान तथा टी मान 0.877 है जो कि 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं है। मध्य मान में अंतर होते हुए भी दोनों समूहों के पूर्वार्ध परीक्षणों के परिणामों में सार्थक अंतर नहीं है अतः दोनों समूह औसतन रूप से समान है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य एक प्रयोगात्मक अध्ययन है। अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति एवं निर्मित परिकल्पना के सत्यापन के उद्देश्य से एकत्रित किए गए आंकड़ों के विश्लेषण, निष्कर्षों पर परिचर्चा के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं की सामाजिक अध्ययन या विज्ञान के शिक्षण हेतु शिक्षण सहायक सामग्रियों का प्रयोग छात्रों के उपलब्धि एवं अधिगम स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। वर्तमान तकनीकी युग में कंप्यूटर, इंटरनेट, दूरसंचार के साधन, पत्रिकाओं आदि में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक आदि विषयों से संबंधित सूचनाएं प्रकाशित एवं प्रसारित होती है। विद्यार्थी इनसे बहुत कुछ सीखते हैं और उन जानकारियों एवं सूचनाओं का प्रयोग अपने अध्ययन में करते हैं। शोध के आधार पर सामाजिक अध्ययन या विज्ञान के शिक्षण में विधिवत विधि की अपेक्षा शिक्षण सहायक साधनों का उपयोग अधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है।

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन या विज्ञान में विद्यार्थियों की उपलब्धि पर शिक्षण सहायक सामग्रियों के प्रयोग का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत अध्ययन बहुत छोटे न्याय दर्श पर एवं अपेक्षाकृत कम समय अवधि में किया गया, इसी प्रकार का अध्ययन बड़े न्याय दर्श एवं लंबी समय अवधि निर्धारित करके किया जा सकता है।
2. अधिक प्रमाणिक निष्कर्ष प्राप्त करने के उद्देश्य से इस प्रकार का अध्ययन विभिन्न प्रकार के विद्यालयों पर भी किया जा सकता है। कक्षा स्तरों एवं विभिन्न विद्यालयों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन के समान प्रयोगात्मक अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में भी संचालित किया जा सकता है।
4. सामाजिक अध्ययन या विज्ञान की किस विषय वस्तु के लिए कौन सी शिक्षण विधि उपयुक्त है इस आधार पर भी अन्वेषण किया जा सकता है।
5. अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों एवं शैक्षिक निहितार्थओं को सारांश रूप में संकलित कर शिक्षकों के उपयोग हेतु उपलब्ध कराया जा सकता है ताकि वे सामाजिक अध्ययन या विज्ञान के ही नहीं अपितु अन्य विषयों के महत्व को समझे एवं उसे व्यवहारिक रूप देने का प्रयास करें।

*** Corresponding Author:**
सतीश चन्द सैनी, *सहायक आचार्य*
एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर
Email-Satishchandsaini75@gmail.com, Mob- 9887543963